D8

Remettre les 12 paragraphes en ordre (Rao Chandaniyan, de la lignée des Chandela, à Jaunpur) en vous aidant de la ponctuation, des indications temporelles (iske bâd, phir, etc.), logiques (tab, phir bhî, inkî bâten sunkar, etc) et des pronoms de reprise (ye, in, is, etc.). Réponse : sous forme de liste ré-ordonnée des numéros des paragraphes ci-dessous

1. “इस बारे में हमारे सेनापति की क्या राय है?” राव चंदनिया ने सेनापति की तरफ़ देखते हुए कहा ।

2. “मेरा भी ऐसा ही विचार है”, राजा ने अपने मंत्री के कथन का अनुमोदन करते हुए कहा ।

3. इसके बाद मंत्रणाकक्ष में कुछ देर के लिए खोमोशी छा गई । तभी राजा की नज़र अपने सेनापति पर पड़ी । आकर्षक व्यक्तित्व वाले इस युवक से प्रभावित होकर राव चंदनियां ने सेनापति पद पर उस की नियुक्ति हाल ही में की थी ।

4. उन दिनों जौनपुर की गद्दी पर पठान राज कर रहे थे । पिछले सौ वर्षों से चंदेला के राव के साथसाथ गढ़वाल के छोटे बड़े अन्य हिन्दू राजाओं को भी जौनपुर के पठान मुसलमानों के वर्चस्व को मानना पड़ रहा था । उनके घर की सुंदर कन्याएं जौनपुर के मुसलमानों के हरम में बेगमें बनकर जाने लगी थीं। इन विवाहों को राजपूत समाज ने स्वीकृति भी दे दी थी । किन्तु ये विवाहित लड़कियां अपने पिता के घर नहीं जा सकती थीं ।

5. जौनपुर के इसी प्रौढ़ सुलतान मुजफ़्फ़र खां को जब एक रूपसी चंदेला राजकन्या की तस्वीर हाथ लग गई तो वह उस सौंदर्य पर मुग्ध होकर उसे पाने के लिए आतुर हो उठा । चंदेला राज की कन्याएं इससे पहले जौनपुर के महल की शोभा बनती रही थीं । अतः सुलतान ने निश्चिंत होकर एक दूत द्वारा यह संदेश भिजवाया कि राजकन्या से विवाह करने को इच्छुक है । यदि राव चंदनियां सुलतान को दामाद के रूप में स्वीकार कर लें तो सुलतान उसके कृतज्ञ रहेंगे । फिर सुलतान को दामाद के रूप में अपना कर राजपूतं के गौर्व में भी वृद्धी होगी ।

6. तब जौनपुर का सुलतान मुज़फ़्फ़र खां था । वह प्रौढ़ हो चुका था । वह एक समझदार शासक के रूप में प्रसिद्ध था । हिंदुओं, मुसलमानों सभी को वह एक दृष्टि से देखता था । हिंदू प्रजा पर किसी भी तरह का आत्याचार न हो, इस बात का वह पूरा ध्यान रखता था ।

7. फिर भी अपने पिता के घर से इन कन्याओं का संबंध एकदम समाप्त नहीं हो जाता था । मातापिता, भाईबहन जब भी चाहते, जौनपुर जाकर अपनी बेटी या बहन से मिल आते थे । जौनपुर के सुलतान ने अपने हिंदू संबंधियों के ठहरने के लिए एक विशेष महल का भी निर्माण करवा रखा था तथा उनकी सेवा में किसी किस्म की कमी नहीं रखी जाती थी।

8. मंत्री अभिजीत शर्मा ने अपनी शिखा को एक हाथ से सहलाते हुए कहा, “महाराज, इस कलियुग में शास्त्रविधान को पूर्ण रूप से मानकर चलना संभव नहीं है। इस तरह के कुछ विवाह हुए भी हैं। फिर जौनपुर के सुलतान से राजकन्या का विवाह कर देने से इन दोनों राज्यों में संबंध और घनिष्ठ होंगे जिस से उत्तर भारत में चंदेला राज्य व राजपूतों की प्रतिष्ठा बढ़ेगी ही”।

9. राजा की बात सुनकर सेनापति प्रवीरमल्ल के मस्तक की रेखाएं तन चुकी थीं । किंतु उसने खामोश रहना ही श्रयस्कर समझा । मंत्री अभिजीत शर्मा ने सेनापति की तरफ़ देख किंचित व्यंग्य से कहा, “सेनापति को क्या यह पसंद नहीं ?”...

10. राव चंदनियां को इस प्रस्ताव में कुछ भी अनुचित नज़र नहीं आया । राजपूत अपनी कन्याओं को विधर्मियों को दे रहे थे । इस से उन की सामाजिक प्रतिष्ठा ही बढ़ी थी। फिर भी उन्होंने इस प्रस्ताव पर राज्य के विरष्ठ पदाधिकारियों की राय ले लेना उचित समझा।

11. राव चंदनियां चंदेला राजपूतों के राजा थे । कभी ये चंदेला राव स्वाधीन राजा होते थे, किन्तु भारत में मुसलमानों के आगमन के बाद वंशमर्यादा व आत्मसम्मान को तिलंजली दे उन्हें मुसलमानों का आधिपत्य स्वीकार करना पड़ा । सिर्फ़ चंदेला राजा ही क्या, गढ़वाल के दूसरे राजाओं की भी यही दशा थी।

12. राव चंदनियां ने इस प्रस्ताव में मंत्रणा के लिए मंत्री व सेनापति को बयलावा भेजा । मंत्रणाकक्ष में उन के उपस्थित होने पर राव चंदनियां ने उन्हें जौनपुर के सुलतान के प्रस्ताव की जानकारी दी और उन से इस संबंध में राय मांगी ।